प्रश्न - पेपर प२ ता. १२-१०-८६

'हैम सं. प्र. म.' पाठ १८थी २६ 70 मार्क्स

प्र. १ नीचेना वाक्योनुं संधि साथे संस्कृत लखो। (भू.कृ. तथा रूप बंने लखवा) गमे ते-५ १२ मार्क्स

(1) श्री हेमचंद्राचार्य सूरीजी वडे कहेवायेला (ब्रू) श्री कुमारपाल राजाए आ पृथ्वी ऊपर अनेक जिनमंदिरो बनाव्या अने ते मंदिरो द्वारा आ पृथ्वी वडे शोभायुं।

(२) पिता वडे आदेश करायो के हे पुत्रो जो तमारा माटे कुवामां पडायुं होत तो तमे रक्षण कराया होत।

(3) आत्मामां गुणोनु सर्जन करवा (सृज्) अथवा तो गुणोने स्पर्शवा जे जीवो वडे गुरुनुं शरणुं स्वीकाराशे, ते जीवो वडे जल्दीथी आ संसार सागर तराशे अने शाश्वत सुखमां रहेवाशे।

(४) भणतां एवा (अधि+इ) विद्यार्थीओ वडे ग्रहण करानारा पाठो द्वारा खरेखर सर्वजीवोमां आत्मानुं दर्शन कराशे अने तेना द्वारा मैत्री भाव घणो ते जीवोमां प्रगट थशे।

(5) भरत महाराजा वडे दीक्षा लेवाई (प्र + व्रज्) अने आत्मानी एवी साधना कराई के जे साधना द्वारा सर्व कर्मो बलाया अने पोतानो आत्मा पवित्र अने निर्मल करायो।

प्र. २ नीचेना रूपोनी साधनिका करी अर्थ लखो। गमे ते -५ १२ मार्क्स

(1) प्लायिवांसौ (२) दुराणुषी (3) नीरोक्तासि

(४) निरुदुवुः (5) सन्नीजे

प्र. 3 (अ) नीचेनाना मांग्या प्रमाणे रूपो लखो। गमे ते ५ १२ मार्क्स

(1) परि + वे - उभय. २पु. भवि. परोक्षा

(२) उद् + पॄ - परो. कृदन्त त्रणे लिंग 7-8

(3) उद् + सु + इ - कर्तरि - कर्मणी - २-3 पु. परोक्षा - क्रिया.

(४) निस् + ध्यै - भवि. तथा प. कृ. स्त्री. पु. ६ थी ८

(5) परा + ऊर्णु - भवि. " परोक्षा २-3 पु. कर्मणि

(ब) नीचेना शब्दोना विग्रह करी रूपो लखो। गमे ते - ५ ८ मार्क्स

(1) मित्रद्रुह् - 1-5-7 (४) दोस् - एक व. बहु व.

(२) धर्मबुध् - ६ थी ८ (5) यकृत् - न. १-3-5-7

(3) वर्षाभू - स्त्री. ए.व. ब.व.

प्र. ४ नीचेना प्रश्नोना जवाब आपो। गमे ते - 7 १४ मार्क्स

(1) आम् ने तिवत् करवाथी शुं फायदो थयो? ते सद्दष्टांत जणावो

(२) पाठ २६ नि. ८5 शा माटे ते जणावी दीर्घ स्वर वधु के गुरू? केटला?

(3) पाठ २६ नि. ८।। शा माटे? ते न होत तो शुं खोटुं रूप थात? ते जणावी पाठ २६ नि ९/२ शा माटे?

(४) कुटादि नो नियम न होत तो धु धातुना थतां अशुद्ध रूपो लखी
आनिट् कारिका श्लोक ३ जो लखो।
(5) सीत्तेरमी बाला, एकवीशमो मित्र तथा चोथी माला माटे संख्यापूरक शब्दो लखो।
(6) आवृत्तिदर्शक इत् वगरना प्रत्यय लखी बेमां दुःखी माता तथा
बेमां दूर एवुं वन माटे तद्धित प्रत्ययान्त शब्द लखो।
(7) कियत्यः नद्यः, ताति पुरूषाः तथा केशीकृता नो विग्रह लखो।
(8) वृद्धि विना कया स्वरनो क्यारे ए थाय (पा.१७ नि.१७) ते जणावी
केटला धातु सिवायना नित्य सेट् व्यंजनान्त धातु कहेवाय तेनी मात्र संख्या लखो
(वेट / १०० वगरना)

प्र. 5 नीचेना वाक्योनुं ससांधि संस्कृत करो। १२ मार्क्स
(1) अमे अर्हद्अभिषेक पूजन जोयुं अने अरिहंत परमात्माना पूजनथी भावित थइने अमारा पापोनुं प्रक्षालन करशुं अने परमात्माना सालंबन ध्यान द्वारा महाविदेह क्षेत्रमां जइने सीमंधरस्वामि भगवानने समवसरणमां साक्षात् मलशुं अने प्रभुना चरणकमलमां नमस्कार करीने प्रभुनी देशना सांभलशुं।
(२) अंत्यन्त नाना बालके 75मी कन्या पासेथी आटलु दही मांग्युं पण तेने ते न आप्युं ते नाना बालक ऊपर दया आवता कृपालु एवी ३ कन्याए तेटलुं पाणी आप्युं।
(3) **पाठशालामां भणता एवा अमारावडे आजथी १० दिवस पहेला** आ बुकना २३ पाठ भणाया गइकाले परीक्षा पण आपी हवे महोत्सवनी पूर्णाहुती बाद अमारा अध्यापक श्री अमारा परिणाम जणावशे।
(४) जो दोषो चित्तमां उकले तो आराधना द्वारा ते बले अथवा तो आत्मामांथी ते पलायन थइ जाय अने तेथी आत्मा उदयने पामे।

जवाबः- प्र.(२) १) न थाय आम् पूर्वक थाय. २) दूर+अन्-नप्र. द्वि.व.
3) निर्+रुज्-२.पु.ओ.व. ४) निस्+उद्+वे.-३.पु.ब.व. 5) सम्+नि+ईजे